वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

फरवरी – 2024

- *पावन महोत्सव 2024*
- *श्राद्ध सभा*
- *हम कितने विश्वास पात्र हैं?*
- *हमें गुरू चाहिए था ऐसा*
- *देव समाज में काम करने वालों के लिए*

श्राद्ध सभा

बहुत ही सम्मान के योग्य हमारे साथी सेवक श्रीमान जगजीत सिंह जी जिनका 28.12.2023 को परलोक गमन हो गया था उनके सम्बन्ध में देव समाज की तरफ से श्राद्ध की सभा विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान भल्ला जी के यहाँ लुधियाना में रखी गई। श्रीमान भल्ला जी के पारिवारिक जनों ने व उनके कई सेवाकारियों ने इस श्राद्ध सभा में शामिल हुए जनों का बहुत श्रद्धा एवं सम्मान भाव से स्वागत एवं नाश्ते, खाने आदि का भी प्रबन्ध किया।

परलोक के सम्बन्ध में इस श्राद्ध सभा में शामिल होने के लिए श्रीमान जगजीत सिंह जी के पारिवारिक जन, कुछ उनके लोकल जानकार एवं लुधियाना के कई धर्म सम्बन्धी और मल्लेकां, सिरसा, गोनियाना, बठिंडा व चण्डीगढ़ आदि से धर्म सम्बन्धी भी पहुँचे।

विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने सभापति के तौर पर इस कार्यवाही को पूर्ण किया। उन्होंने ब्यान फरमाया कि अच्छे जन अपने अच्छे गुणों व कामों से इस दुनियां में अपना योगदान देते हैं और हमें चाहिए कि उनके उन योगदानों को हम अपनी श्रद्धा की आँखों से देख सकें और उन्हें सम्मान दे सकें। यह विधि पूरी करके हम किसी जन के बारे में उनको सच्ची श्रद्धांजली दे सकते हैं। सभापति जी ने बताया कि इस लोक में हमसे बिछड़ कर परलोक वासी सम्बन्धी के उच्च कार्यों से अनुभव लेकर हम अपना भला कर सकते हैं। इसके बाद सभापति जी ने बहुत भाव-विभोर होकर अपनी दीनता का प्रकाश करते हुए परलोकवासी सम्बन्धी श्रीमान जगजीत सिंह जी के अच्छे गुणों को, उनकी साफ-सरल हृदय की अवस्था को, उनके परोपकार के कामों को, उनकी मिशन को लेकर हृदय में बसती तड़प को और उनके नेक दिल से हुए निज के साधनों को व कई प्रकार के शुभ संग्रामों को उनके जीवन की कई घटनाओं का हवाला देकर उन्हें उपस्थित जनों के सामने प्रकट किया।

उनके सारे ब्यान के बाद श्रीमान भल्ला जी ने भी परलोकवासी श्रीमान जगजीत सिंह जी की अच्छी यादों को ताजा करते हुए उनके शुभ संग्रामों और उनके अन्दर की शुभ आशाओं के बारे में ब्यान किया।

चण्डीगढ़ से पहुँचे हुए विशेष सम्मान के योग्य श्रीमति सुरजीत बराड़ जी ने इसके बाद दिवंगत आत्मा के बारे में गहरे भावों से अपनी श्रद्धा-सम्मान का प्रकाश करते हुए उनकी सेवाओं व उनके सहयोग और तड़प का ब्यान किया। उन्होंने श्रीमान जी के बच्चों से यह गहरे दिल से बेनती की कि वे भी गुरू महाराज के दर को आकर जरूर देखें यह भी उनकी अपने पिता को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

इसके बाद हाज़रीन में से वहाँ के स्थानीय धर्म सम्बन्धी भल्ला साहिब, अशोक जी, सुमित आदि ने उनके बारे में अच्छे भावों का प्रकाश किया व उनके नज़दीकी व एक परिवारिक जन आदि कई जनों ने उनके बारे में गुणों व सराहनीय

शेष पृष्ठ 20 पर

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 2
फरवरी – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

पावन महोत्सव 2024

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 173वां पावन शुभ जन्म महोत्सव हर बार की तरह देव आश्रम निकट डेराबस्सी में चाव भाव से मनाया गया। इस पावन महोत्सव का वातावरण बहुत प्रभावदायक रहा। इस बार यात्रियों की संख्या पहले से बहुत अधिक थी। मल्लेकां और केसूपुरा क्षेत्र से यात्रियों की बस भरकर आई। महोत्सव से पहले श्रीमान बलबहादुर जी ने कई क्षेत्रों का प्रचार दौरा किया। महोत्सव की तैयारी करने के लिए श्रीमान गोपाल जी पहले ही देवाश्रम में मौजूद थे। श्रीमान सुखेदव सिंह जी जोसन, श्रीमान सुरेन्द्र भाटिया जी, श्रीमान जसविंद्र सिंह जी और अन्य साथी कुछ दिन पहले पहुँच गए थे। श्रीमान जलधर जी और श्रीमान गौतम जी गोनियाना भी पहले पहुँच गए थे। सबने मिल कर महोत्सव की तैयारी में विशेष भाग लिया। इन सब ने मिलकर सारी तैयारियाँ पहले पूरी कर ली। सारी booking पहले ही कर ली गई थी। सजावट करने वालों ने हाल और सारे देव आश्रम को सुन्दर रूप दे दिया था। खाने वाली पार्टी भी संगरूर से 25 तारीख तक पहुँच गई थी। किताबों की स्टाल, दान आदि लेने का काम गौतम जी करते रहे। घंटा बजाने की ड्यूटी श्रीमान जलधर जी करते रहे। पानी गरम करने का काम श्रीमान बूटा सिंह जी और श्रीमान सुन्दर लाल जी हर बार की तरह करते रहे। खाना खिलाने आदि का काम मल्लेकां पार्टी और संगरूर के धर्म संबंधी मिलकर करते रहे। सभाएं विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान यशपाल भल्ला जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान पंडित राधेश्याम जी ने करवाई और पब्लिक लैक्चर श्रीमान सरताज सिंह जी, श्रीमान गौतम जी और श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने दिए। महोत्सव का सारा प्रबंध श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने बहुत मेहनत से किया। श्रीमान रमेश जी और श्रीमती भजन कौर जी ने दिल से पूरा सहयोग दिया और अभिषेक जी की पत्नी भी सहायक होती रहीं। श्रीमान गुरदेव राज जी, गौतम जी, अलका जी, नवदीप कौर जी ने व अन्य कई धर्म सम्बन्धियों ने भजनों का गान किया। विशेष सभा में भजन श्रीमान पियूष भल्ला जी और लुधियाना से आए धर्म संबंधियों ने गाए।

प्रवेश सभा, 25 दिसम्बर, 2023
शाम : 5.00 बजे
सभापति : श्रीमान पण्डित राधे श्याम जी।

श्रीमान गुरदेव राज जी ने 'हमारे पूजनीय सतगुरू जी तुम हो धन्य जी तुम हो धन्य' भजन का गान किया। देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने भगवान देवात्मा की देव ज्योति के लिए आशीर्वाद प्रार्थना की। फिर श्रीमान गौतम जी ने 'तुम्हारे दर से हे सतगुरू धर्म का दान मिल जावे' भजन का गान किया। सभापति जी ने बताया कि भगवान देवात्मा का 173वां शुभ जन्म महोत्सव हम मना रहे हैं। उन्होंने बताया कि 12 लाख साल पहले मनुष्य इस पृथ्वी पर प्रकट हुआ और धीरे धीरे विकसित हुआ। दुनियां में 30 हजार से ज्यादा धर्म मत हैं, पर धर्म का निशान आज भी नहीं है। और कोई आदर्श उच्च जीवनधारी नहीं मिल सका, इसीलिए नेचर ने 173 वर्ष पहले भगवान देवात्मा को प्रकट किया। 16 फरवरी सन 1887 को उन्होंने धर्म की सच्ची शिक्षा देने के लिए देव समाज की स्थापना की। सभापति जी ने फरमाया के धर्म स्थानों, मंदिरों और अन्य स्थानों में इंसान अपने लालच की पूर्ति के लिए पूजाएं और प्रार्थनाएं करता है। फिर सभापति जी ने भगवान देवात्मा की धर्म की शिक्षा का वर्णन करते हुए कहा कि धर्म उच्च भावों का नाम है। भगवान के जीवन की छोटी छोटी घटनाएं धर्म की समझ देती हैं। गिलहरी की घटना का वर्णन किया गया। सभापति जी ने भगवान देव आत्मा की खुले नल को बंद करने की घटना और अपने बड़ों के सम्मान, अध्यापकों के सम्मान की घटना, रुड़की की घटनाएं, गुरू धारण करने की जीवन ब्रत ग्रहण करने की और सत्य धर्म की खोज की घटनाओं का वर्णन किया। सभापति जी ने महोत्सव की विशेषताओं का वर्णन करते हुए डॉक्टर हरनाम सिंह जी की कुर्बानी की घटना का बयान किया। भगवान देवात्मा के जन्म महोत्सव से लाभ उठाने की जरूरी शर्तों का ब्यान करते हुए सभापति जी ने अनुशासन का पालन करना, सभाओं में समय पर आना, एकाकारी पहन कर आना और हितकर बातचीत करने के विषय में बताया। सभापति जी ने खड़े होकर यात्रियों का इस पावन महोत्सव पर पधारने का स्वागत किया। फिर अलका जी और श्रीमती नवदीप कौर जी ने स्वागत गीत गाया। अंत में श्रीमान सरताज सिंह जी ने अगले दिन के प्रोग्राम, ड्यूटियां और सूचनाएं बताईं।

26 दिसम्बर 2023, सुबह 9.30 बजे,
पहली सभा : भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध।
सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

देव स्तोत्र के गान और प्रार्थना के बाद श्रीमान गुरदेव राज जी और गौतम जी ने "परम आवश्यक जीवनदायक मेरे भगवान का संबंध" भजन का गान किया। सभापति जी ने फरमाया कि हमारे देश में संबंधों को त्यागने की शिक्षा दी जाती रही है। सूर्य, हवा, पानी आदि भी हमारे परम आवश्यक और जीवनदायक संबंधी हैं। सभापति जी ने लाला जूलीराम जी की घटना बताते हुए फरमाया कि कैसे भगवान देवात्मा के संबंध से उन्हें रिश्वत के पाप से निजात मिली।

भगवान देवात्मा के संबंध से कैसे सभापति जी के खुद के जीवन में शुभ परिवर्तन आया, उसका भी उन्होंने वर्णन किया। इसके बाद उन्होंने सभा में मौजूद श्रीमान सुरेन्द्र भाटिया के जीवन में आए हुए शुभ परिवर्तन को बताते हुए समझाया कि कैसे भगवान देवात्मा का संबंध मनुष्य मात्र के लिए परम आवश्यक और जीवनदायक संबंध है।

संगीत सभा : दोपहर 2.00 बजे।

यह संगीत सभा अपने आप में विशेष थी, जिसमें भजन गाने वालों के पास ना कोई बाजा आदि था और ना ही कोई बहुत बड़ी सुर ताल की महारत परन्तु भजन इतनी श्रद्धा से गाए जा रहे थे कि बहुत से जन प्रभावित होकर पाक आंसू बहा रहे थे। स्वर्ग का दृश्य उत्पन्न हो रहा था। यह सभा ही महोत्सव को कामयाब बनाने के लिए काफी से बढ़कर थी। इस संगीत सभा में श्रीमान गौतम जी, श्रीमान गुरूदेव राज जी, श्रीमान सुखदेव जोसन जी , श्रीमान जगजीत सिंह जी, श्रीमती वंदना गर्ग जी, श्रीमती भजन कौर जी, श्रीमती रीटा रानी जी, श्रीमान राधे श्याम जी, श्रीमान विजय कुमार जी लुधियाना, श्रीमती सुरजीत कौर जी केसूपुरा आदि धर्म संबंधियों ने भजन गाए।

पब्लिक तकरीर, शाम 4.00 बजे।

वक्ताः प्रिंसिपल श्रीमान सरताज सिंह जी बाजवा।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

विषय : भगवान देव आत्मा का अद्वितीय कार्य और उसके अनोखे फल।

सबसे पहले सभापति जी ने वक्ता का बहुत सुंदर परिचय करवाया। उनकी मानसिक योग्यताओं और उनके जीवन परिवर्तन के बारे में बताया।

इस पब्लिक तकरीर में वक्ता ने देव समाज की तीन महान हस्तियों का वर्णन किया जिनके नाम इस प्रकार हैं – श्रीमान भाई मोहन देव जी, श्रीमान पी वी कनल जी और श्रीमान साधु जानकी दास जी। उन्होंने फरमाया कि भाई मोहन देव जी बहुत ही पवित्र आत्मा थे। वह देव समाज के लिए बहुत बड़ी कुर्बानी करके आए थे। जब कोई किसी प्रकार की गलती करता तो वह उनके लिए हृदय की विशेष तड़प से शुभ कामना का साधन करते थे। उनके पुत्र ने एक बार चोरी कर ली थी, भाई मोहन देव जी उसको डांटने की बजाए उसके लिए गहरी शुभकामना के द्वारा उसमें शुभ परिवर्तन लाए। वह बहुत सादगीपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। एक बार उनके एक पुत्र के कोट की बाज़ू इतनी फटी हुई थी कि उसकी मरम्मत भी नहीं हो सकती थी। वह स्वयं अचार के साथ भी रोटी खा लेते थे परंतु भगवान देवात्मा के मिशन के लिए सदा वफादार रहे, भगवान देवात्मा भी उन पर बहुत विश्वास करते थे। श्रीमान पी. वी. कनल जी के त्याग और उनकी देव समाज के प्रति सेवाओं का भी वर्णन किया गया। उनकी धर्मपत्नी की सेवाओं का भी वर्णन किया। उन्होंने फरमाया कि कैसे उन्होंने जात बिरादरी के बंधनों को तोड़कर शादी की। वक्ता ने श्रीमान साधु जानकी दास जी के जीवन का वर्णन करते हुए बताया कि कैसे वह भगवान देव आत्मा के निजी सैक्ट्री होकर सेवा करते थे। उनकी एक टांग लकड़ी की थी जिसे वह पहन

कर ही सोया करते थे ताकि उन्हें भगवान देव आत्मा की सेवा में कोई विघ्न उत्पन्न ना हो। सारा लैक्चर बहुत ही शानदार और प्रभावशाली था। अंत में सभापति जी ने माननीय वक्ता का बहुत – बहुत धन्यवाद किया।

27 दिसम्बर 2023

महोत्सव का विशेष दिन।

सुबह से ही देव आश्रम में खूब चहल पहल थी। सब और से भगवान देवात्मा के शुभ जन्म महोत्सव की मुबारक हो की गूंज उठ रही थी। नहा धोकर यात्री महोत्सव हाल के नजदीक सवेरे 6.15 बजे के करीब इकट्ठे हो रहे थे, जहां श्रीमान गुरदेव राज जी अपनी पार्टी के साथ जोश के साथ भजन गा रहे थे। इसमें स्त्रियां भी अपना भाग निभा रही थी। लगभग एक घंटे भर भगवान देवात्मा की महिमा के भजनों का गान होता रहा। समय 7:18 पर सूर्य उदय का समय था। घंटा बजाते ही भगवान देवात्मा की जय के नारे गूंजने लगे। खुशी में बैंड बजने लगा। "प्रगटे देव गुरू भगवान जीवन ज्योति देने वाले" भजन का गान धर्म संबंधियों ने जोश के साथ किया। फिर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने ऊंचे स्थान पर खड़े होकर जोश से भरकर आज के दिन की महिमा और विशेषता का वर्णन करते हुए गहरी शुभकामनाएं की। धर्म संबंधियों को इस विशेष दिन के लिए तैयार होने की अपील की। चार बार जय ध्वनि होने के साथ ही बैंड के तराने बजने लगे। धर्म संबंधी अपने तारणहारे गुरू के जन्म की खुशी में नाचने लगे। साथ – साथ धर्म संबंधी गुरू महाराज की छवि के आगे फूल मालाएं भेंट करके प्रणाम करते गए। बहुत सुंदर नज़ारा था जो फरिश्तों के देखने वाला था।

महासभा : सवेरे 9.00 बजे

विषय : परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव, उनका अद्वितीय लक्ष्य, उस लक्ष्य के लिए उनका अद्वितीय त्याग, तप और उत्पीड़न, निराली धर्म समाज की स्थापना, सत्य धर्म की खोज और आत्माओं का कल्याण। धन और जन की अपील।

सभापति : श्रीमान यशपाल जी भल्ला

श्रीमान पियूष जी ने 'जग विच धुम्मा पाईयां' भजन का गान अपने साथियों के साथ किया। देव स्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की। फिर 'अद्वितीय जीवन व्रत धारी अद्वितीय महिमा है तुम्हारी' भजन का बहुत मधुर आवाज में पीयूष जी ने गान किया। सभापति जी ने सन 1924, 1927, 1928 की महासभा में पूजनीय भगवान की पेश की हुई वाणी का वर्णन किया। उन्होंने भगवान देवात्मा की देव वाणी "मैं इस पृथ्वी में स्वर्ग चाहता हूं", पढ़कर सुनाई। उन्होंने 'आज समय कितना सुंदर है, आज का दिवस महान' सुनाया। उन्होंने बताया कि विश्व में शक्तियों का खेल है विकास क्रम में भगवान देव आत्मा प्रकट हुए हैं। श्रीमान पी वी कनल जी ने फरमाया था देव युग यानी आत्म कल्याण का युग शुरू हो चुका है और सेवक दल अर्थात पांचवें जगत का निर्माण भी हो चुका है। कनल साहब महासभा में पूजनीय भगवान की जीवनी मुझ में देव जीवन का विकास को हाथ में लेकर फूट – फूट कर रोने लग जाते

थे। सभापति जी ने फरमाया कि श्रीमान हितैषी सिंह जी कहा करते थे कि महोत्सव पर आकर हमने देव समाज पर कोई मेहरबानी नहीं की है बल्कि अपने ही सार अस्तित्व पर मेहरबानी की है। सभापति जी ने भगवान देव आत्मा के लाहौर में प्रवेश के बाद वहां पर दो पत्रिकाएं बिरादरे हिंद और हिंदू बांधव का प्रकाशन और उनके तेजस्वी और प्रभावशाली उपदेशों द्वारा हैरतअंगेज परिवर्तन के कार्यों का वर्णन किया। उनकी सभा के तीसरे चरण का विषय था सत्य धर्म की खोज। उन्होंने भगवान देवात्मा द्वारा सत्य धर्म की खोज का वर्णन किया और बताया की आत्मा में उच्च परिवर्तन का नाम ही धर्म है और धर्म सारे मनुष्य मात्र के लिए एक ही है। सभापति जी ने श्रीमान पी वी कनल जी, साधु जानकी दास जी के जीवन में आए शुभ परिवर्तन का भी वर्णन किया।

धन और जन की अपील के रिस्पांस में श्रीमान जागीर सिंह जी ने अपने जीवन को भेंट करने का संकल्प किया और दो नए जनों ने नशों से बचने की प्रतिज्ञा की। दान भी अच्छी मात्रा में प्राप्त हुआ। कुल दान 4,30,920 रूपये इक्ट्ठा हुआ।

सभा के अंत में देव समाज में सेवाकारी हो रहे सेवकों का सम्मान प्रदर्शन किया गया। उन्हें शॉल आदि भेंट किए गए। और उनके गले में फूलों के हार डाले गए।

बच्चों की सभा : शाम 3.30 बजे,
सभापति : श्रीमती सतिंदर ढिल्लों जी

सबसे पहले श्रीमान गुरूदेव राज जी ने 'पाऊं मैं धर्म का जीवन यही हो कामना मेरी' भजन का गान किया। जिन बच्चों ने देवात्मा की जीवन घटनाएं सुनाई उनके नाम इस प्रकार है – जैस्मीन कौर, सुखमणि, वंशिका, अंशनून कौर, हरसिमरत कौर, शुभकीरत, पलक, गुरमुख कौर, संदीप सिंह, अनायरा (अलका जी की बेटी), एक छोटे बच्चे गुरूमन्नत सिंह बराड़ ने देव समाज की प्रतिज्ञाएं सुनाई। कई और अन्य बहुत छोटे बच्चों ने भी इस सभा में भाग लिया। बच्चे बहुत तैयारी के साथ आए थे। बच्चों को इनाम दिए गए।

शाम : 4.00 बजे पब्लिक लैक्चर,
वक्ता : श्रीमान गौतम जी।

सबसे पहले सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने गौतम जी का परिचय करवाया। वक्ता ने बताया कि अभी भगवान देवात्मा के काम की कदर नहीं है परंतु हम फिर भी अपने भगवान का कार्य फैलाएंगे। उन्होंने विकास क्रम के सिद्धांत का वर्णन किया और बताया कि जिन अंगों का हम अधिक इस्तेमाल करते हैं वह शक्तिशाली बन जाते हैं और जिन अंगों का हम इस्तेमाल नहीं करते वह धीरे – धीरे समाप्त हो जाते हैं। वैसे ही जिन भावों से हम अधिक क्रियाएं करते हैं वह भाव अधिक बलशाली हो जाते हैं जबकि दूसरे भाव उतने बलशाली नहीं बन सकते। उन्होंने वातावरण को समझने के लिए श्रीमान गुरमुख सिंह जी के जीवन की घटनाओं का वर्णन किया। फिर उन्होंने विकास क्रम को बताते हुए मनुष्य की उत्पत्ति और देवात्मा के आविर्भाव के विषय में फरमाया।

उन्होंने बताया कि हर धर्म में पूजा पाठ होता है, साधन होते हैं परंतु देव धर्म में अपने आत्मिक जीवन को देखना ही साधन है। उन्होंने साधन करने और साहित्य पढ़ने के विषय में और उनकी विशेषता के विषय में वर्णन किया। उन्होंने साधन करने की विधि के विषय में पढ़कर सुनाया। आपका लैक्चर काफी प्रभावशाली था।

दूसरा पब्लिक लैक्चर

वक्ता : श्रीमती सुरजीत बराड़ जी।

विषय : भगवान देवात्मा संतप्त क्यों रहे?

उन्होंने फरमाया कि भगवान देवात्मा को मनुष्यों द्वारा तरह – तरह से सताया गया। उनको कोर्ट कचहरियों में भेजा गया। उनके बच्चों ने उन पर अत्याचार किया। भगवान के अंदर सफाई का बोध, पवित्रता का बोध, ईमानदारी का बोध, समय की पाबंदी आदि के बोध थे। जो लोग इन बोधों के खिलाफ कोई क्रिया करते थे, उनसे उनको बहुत ही दुख पहुंचता था। भगवान देवात्मा की प्रकृति मनुष्य प्रकृति के उलट होने के कारण उन्हें तरह – तरह के दुख अजाब उठाने पड़े। भगवान देवात्मा के सेवकों ने भिन्न – भिन्न तरह से शिष्टाचार आदि का उल्लंघन करके, समय की पाबंदी ना करके और उनका अपमान करके, और सम्मान भाव की शून्यता होने के कारण सताया और तड़पाया है। उन्होंने कर्मचारियों द्वारा अपनी प्रतिज्ञा टूटने पर परिशोध ना करने, रेल में उनके सेवक द्वारा उनका अपमान करने, राजपुरा में उनके कर्मचारी द्वारा खाना ठीक समय पर न देने आदि घटनाओं का वर्णन किया। यात्रियों को इस लैक्चर से बहुत लाभ हुआ।

28 दिस्म्बर 2023, वीरवार।

पहली सभा : प्रतिज्ञा पत्र का पाठ और व्याख्या।

सभापति : श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

भजन, देव स्तोत्र और सहाय प्रार्थना के बाद प्रतिज्ञा पत्र का पाठ किया गया। धर्म संबंधियों को अपनी प्रतिज्ञा पर पक्के रहने के लिए गहरे भावों से प्रार्थना की। फिर प्रतिज्ञाओं के चारों भागों अर्थात्

1) भगवान देवात्मा के संबंध में
2) दुराचारों के संबंध में
3) सदाचारों के संबंध में
4) नियत दान आदि देने के संबंध में

चारों प्रतिज्ञाओं की व्याख्या की गई।

दूसरी सभा : महोत्सव में पाए हुए लाभों का वर्णन व भाव प्रकाश।

सभापति जी ने सारी सभाओं का संक्षिप्त वर्णन किया और महोत्सव के विशेष दृश्यों का नक्शा खींचा और धर्म संबंधियों को भाव प्रकाश करने के लिए निमंत्रित किया।

1. श्रीमान रमेश जी डेराबस्सी – गुरू महाराज के जन्मदिन की बधाई देता हूं। गोपाल जी हितकर विचार विमर्श के द्वारा मेरी बहुत सहायता करते रहे हैं

2. श्रीमान जागीर सिंह जी – श्रीमान जी (श्रीमान बलदेव सिंह जी) का धन्यवाद करता हूं कि वह हमें दर्शन देते रहे हैं। श्रीमान सुखदेव सिंह जी इंग्लैंड का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने यह स्थान हमें महोत्सव मनाने के लिए दिया है। श्रीमती सुरजीत बराड़ जी का भी और अन्य सेवा करने वालों का भी धन्यवाद करता हूं। मैं गाली

देने और गलत बोलने से बचूँगा ओर गुस्से से भी बचूँगा।

3. श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेकां – मुझे बच्चों की सभा बहुत अच्छी लगी। हम अनपढ़ हैं परंतु हमारे बच्चे आगे बढ़ रहे हैं जिसकी मुझे बहुत खुशी है।

4. श्रीमान जसविंदर सिंह जी – मैंने पिछले साल दस हजार दान देने की प्रतिज्ञा की थी परंतु 5100 ही दान दिए थे अब मैं पंद्रह हजार के करीब दान दे रहा हूं।

5. डा. नवजोत सिंह जी – खाने के प्रबंध में जो कमियाँ रहीं है, उसके लिए मैं माफी मांगता हूं।

6. श्रीमान हरदेव सिंह जी – मुझे 28 साल सभा सुनते हुए हो गए हैं, परंतु मैं नाम का ही देव समाजी हूँ। बड़े श्रीमान जी माता–पिता को प्रणाम करने के लिए कहते थे, परन्तु एक–दो दिन ही प्रणाम करता था आगे प्रणाम करना बंद कर देता था। मेरी कमियों की वजह से मेरे बच्चे और मेरी धर्मपत्नी मेरे से नाराज रहते हैं। मैं आगे से अपनी धर्मपत्नी का सम्मान किया करूंगा। धर्म संबंधियों की वजह से व्यभिचार से बचा रहा हूं। पति–पत्नी व्रत की वजह से अपनी पत्नी का कुछ सम्मान करने की कोशिश करता हूं। मैं अपने माता–पिता जी की फोटो को हर रोज प्रणाम किया करूंगा।

7. श्रीमान गुरूदेव राज जी–मैं एक नीच और नालायक व्यक्ति हूं। कई बार इतना गुस्सा करता हूं कि मुझे पता नहीं लगता। महोत्सव से पांच सात दिन पहले पैसे की वजह से अपने बड़े भाई का मैंने अपमान किया, उन पर गुस्सा हुआ (आपका दिल भरा हुआ था और जारोंकतार हो रहे थे) महोत्सव पर आकर अपना गुस्सा नजर आ रहा है। कल मेरा सम्मान किया गया जबकि मैंने मल्लेकां मन्दिर में कोई बहुत अधिक सेवा नहीं की। मैं घर जाकर अपने भाई से माफी मागूंगा।

8. श्रीमान सुंदरलाल जी – गुरू महाराज जी ने हमारा बहुत भला किया है। गुरू महराज जी ने हमें नर्क से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश करवा दिया है। सन्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी के उपकार नज़र आ रहे थे। श्रीमान मेहर सिंह जी और उनके ससुर साहब की वजह से हमारे गांव में देव समाज आई उनका भी उपकार नजर आ रहा था। जितना लाभ उठाना चाहिए था, उतना लाभ नहीं उठा रहा हूं। मेरे बच्चों ने मुझे free कर दिया है कि आप गुरू महाराज के मिशन में सेवाकारी होवो। देव समाज में आने से पहले जो घर में नर्क था वह सामने आता है तो शर्म आती है अब गुरू ने घर में स्वर्ग बना दिया है। मुझे बड़ी चिंता है कि बच्चे सभा में नहीं आते। बच्चों को कल्याण सत्संग में आने की प्रेरणा करूंगा।

9. श्रीमती भजन कौर जी–मुझे महसूस हुआ कि गोपाल जी को खाना देने में मुझे कष्ट होता है जिसके लिए मैं शर्मिंदा हूं। श्रीमान जी और बहन सुरजीत जी में मुझे अपने माता पिता नजर आते हैं। मैं अपने भाई को रोज़ याद करती हूं।

10. श्रीमान प्रभदीप सिंह जी (फख़रसर) (यह श्रीमान चन्द सिंह जी के पोते हैं)– मुझे यहां

आकर अपना अहंकार नजर आया है। मैं लोगों को परेशान करता हूँ, वह नजर आया है। उन्होंने यह भी बताया कि मेरे दादा जी समाज के बहुत श्रद्धावान सेवक थे। हमने समाज से दूर होकर बहुत हानि उठाई है। हमारे रिश्तों में अब नर्क है। मैं अब कल्याण सत्संगों में भी अपने परिवार सहित आया करूंगा। उन्होंने एक महीने के लिए शराब छोड़ने की भी प्रतिज्ञा की।

11. श्रीमान बूटा सिंह जी – महोत्सव पर आकर मुझे अपना घमंड नज़र आया है। मैं अपने भाई के साथ अपना संबंध ठीक करूंगा।

12. श्रीमान गोपाल कृष्ण जी – हम सभाएं सुनते रहते हैं कई सालों से सुनते रहे हैं। सभा में आने से पहले हम बीड़ी आदि बेचते थे, एक माता जी को बीड़ी तैयार करके देते थे और अपने आप को सेवाकारी समझते थे। गौतम जी की सभा बहुत अच्छी थी। गौतम जी के प्रति मेरे अंदर सम्मान पैदा हो रहा था। उन्होंने जो सभा कराई उस पर हम सब को ध्यान देने की जरूरत है। महोत्सव के प्रबंध में मेरी तरफ से जो कमी रही है, उसके लिए मैं माफी मांगता हूं। माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने और खेड़ा साहब जी ने जन्म–महोत्सव की खुशी में मिठाई भेजी उसके लिए धन्यवाद। जिन जिन जनों ने सेवा सहायता की उन सबका बहुत बहुत ध न्यवाद।

13. श्रीमती दविंदर कौर जी – सभी सभाएं बहुत अच्छी लगी। श्रीमान सरताज सिंह जी ने जो लैक्चर दिया। श्रीमान गौतम जी ने, श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने जो सभाएं करवाईं बहुत अच्छी लगी। इस बार अच्छी संख्या में हम महोत्सव पर आए हैं उसकी खुशी है। छोटे बच्चे जो हमारे साथ आए हैं उनके माता–पिता का धन्यवाद करती हूं। मैं अगर बच्चों पर नाराज होती हूं तो भी बच्चे मुझे प्यार करते हैं। श्रीमती नवदीप जी जो हमारी रिश्तेदार भी हैं जिन्होंने बच्चों को इतनी तैयारी करवाई है, उनका भी मैं धन्यवाद करती हूं। पुस्तकें पढ़ने में मेरी कमी है मैं प्रतिज्ञा करती हूं कि देव समाज की पुस्तक पढ़ा करूंगी। पहले मैं मजबूरी में सभा में आती थी पर अब यह धर्म मुझे अच्छा लगता है। मुझे लगता है कि हर व्यक्ति को यह धर्म अपनाना चाहिए। देव समाज के वातावरण के कारण ही हमारे बच्चे अच्छे बन गए है।

14. प्रिंसिपल राम जी दास (नये जन) – इस वातावरण का बहुत प्रभाव है, मुझे मेरा सारा जीवन नज़र आ गया। मैं पहली बार यहां आया हूं। यहां के लोगों में अहंकार बहुत कम है। मेरे अंदर अहंकार बहुत ज्यादा है।

15. सुखमणि (एक छोटी बच्ची) – यहां आकर मुझे बहुत अच्छा लगा। घर की याद नहीं आई। मैं अपने टीचर का धन्यवाद करती हूं जो हमें यहां लेकर आई हैं।

16. श्रीमती रीटा रानी जी – यहां आकर बहुत लाभ हुआ है अपने पति (गोपाल कृष्ण) जी की वजह से मैं यहां आई हूं। यहां नहीं आती तो लाभ न होता। धर्म संबंधी प्रेरणा करते हैं, कि सत्संग में आया करो परंतु मैं कम आती हूं। आत्मा की खुराक यहीं से मिलती है। महसूस हुआ है कि मैं ज्यादा से ज्यादा सत्संगों में आया करूंगी।

17. श्रीमती नवदीप कौर जी केसूपुर स्कूल – श्रीमती सुरजीत बराड़ जी ने जो सभा कराई उससे लाभ हुआ है कि हम अपनी चीज़ों को तरतीब में नहीं रखते। अब आगे से चीज़ो को तरतीब से रखूंगी। गलती की वजह से शर्ट खराब हो गई थी, पर सर ने मुझे माफ कर दिया। मैं सरताज सर से और दविंदर कौर मैडम से माफी मागूंगी।

18. श्रीमान राधेश्याम जी शर्मा – गुरू महाराज हमारे सर्वांग हितकर्ता हैं। यहां का प्रबंध और सभाएं बहुत अच्छी थीं। धर्म संबंधियों का धन्यवाद है जो यहां आए हैं। मुझे मेरी कमियां नज़र आती हैं। बहन जी ने मेरी सभा करवाने की ड्यूटी लगा दी। मेरी श्रीमती जी सेहत नाज़ुक होने पर भी यहां आई हैं। मल्लेकां मंन्दिर मेरे से बहुत नजदीक है। मल्लेंका मंदिर के लिए 21000 के दान का वादा करता हूं।

19. जैस्मीन कौर (छोटी बच्ची) – मुझे यहां आकर बहुत अच्छा लगा। नवदीप मैम का धन्यवाद किया।

20 अंशनूर – मेरी माता जी जब बीमार होती हैं, तो भी वह मेरे लिए खाना बनाती हैं पर मैंने उनका कभी धन्यवाद नहीं किया। अब घर जाकर उनका धन्यवाद करूंगी। (इस छोटी बच्ची का भाव प्रकाश बहुत सुंदर था)

21. श्रीमान पी सी दीवान जी – इन्होंने बताया कि मेरा बहुत भला हुआ है।

22. वंशिका (छोटी बच्ची) – मैं अपने माता – पिता से माफी मांगूगी।

23. हरसिमरन (छोटी बच्ची) – मैं अपने माता – पिता का सम्मान किया करूंगी।

24. पलक (छोटी बच्ची) – मैं अपने माता – पिता का सम्मान किया करूंगी।

25. अनिल जी – गुरू महाराज की कृपा से उच्च भावों की कदर हुई है। नीच राग और घृणाओं का वातावरण मारने वाला होता है। दुनियां के वातावरण और यहां के वातावरण में फर्क है। मैं आगे के सत्संगों में पहुंचूंगा।

26. श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना (लिखकर) विशेष सम्मान के योग्य सभी कर्मचारियों की सभाएं जो प्रवेश सभा से लेकर सुनी हैं, वह अच्छी और प्रभावशाली रहीं। प्रवेश सभा में श्रीमान राधेश्याम जी ने दूसरे धर्मों की तुलना में देवधर्म की जो खूबियां बताई बहुत अच्छी लगी। उनका बहुत – बहुत धन्यवाद। संगीत सभा बड़ी रोचक लगी। सभी ने अच्छे ढंग से गाने का पूरा प्रयास किया। बहुत अच्छा लगा, मुझे महसूस हुआ कि लोगों की संगीत में रुचि है। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने परम आवश्यक देवात्मा के संबंध के विषय पर जो सभा की वह अच्छी लगी। महासभा श्री यशपाल भल्ला जी ने करवाई धर्म जीवन क्या है कैसे धर्म जीवन की प्राप्ति हो सकती है उसके लिए हमें बहुत प्रयास करने की जरूरत है। आत्मा में उच्च परिवर्तन और उच्च जीवन ही धर्म जीवन है। निस्वार्थ भाव से की गई सेवाएं ही धर्म जीवन हैं। पीयूष भल्ला जी ने भजनों का गान किया बहुत अच्छा लगा। श्रीमान सरताज सिंह जी ने परलोकवासी उच्च कर्मचारियों का जिक्र किया जिससे अच्छी प्रेरणाए मिलीं। गौतम जी ने साधना में के बारे में जो बातें बताईं कि सच्ची साधना क्या होती है। कैसे करनी चाहिए

सच्ची साधना वही कही जा सकती है, जिससे अपनी कमियों (कमजोरियों) का पता चले और हम में परिवर्तन आए। कुल मिलाकर महोत्सव अच्छा रहा। रहने का, खाने का और अन्य सब प्रकार की सेवाएं पाईं उसके लिए सभी का धन्यवाद। सभी कर्मचारियों और साथी सेवकों से मिलकर बहुत प्रसन्नता मिली। सबका दिल की गहराईयों से धन्यवाद। सबका शुभ हो सबका भला हो। सब का जीवन मंगलमय हो।

गुरू महाराज का तुच्छ सेवक जगजीत सिंह लुधियाना।

27. श्रीमान अशोक कुमार जी गंगानगर (लिखकर) – सत्यदेव की जय। मैं अशोक कुमार श्री गंगानगर से गोपाल जी का बहुत – बहुत शुक्रिया करना चाहता हूं, जिन्होंने मुझे देव समाज में लाकर बहुत बड़ा उपकार किया है और मैं दीवान जी से एक बार माफी मांगना चाहता हूं, जो मैं कठोर शब्द बोल चुका हूं और मैंने सभाओं में आने के बाद अपने स्वर्गीय माता – पिता और भाई को प्रणाम करना शुरू कर दिया है। यहां पर सभाएं सुनने के बाद मुझे मेरी बुराइयां नजर आने लगी हैं।

28. श्रीमती वंदना गर्ग जी (लिखकर) – सत्यदेव की जय, मैं बहुत कम समझ रखने वाली औरत हूं पर जैसी भी थोड़ी बहुत समझ है, उसके अनुसार मुझे पता चला है कि मुझ में जो कमियां हैं, उन्हें मैं अवश्य दूर करूंगी। क्योंकि मुझ में चीज़ों को व्यवस्थित रखने का गुण है और जब चीज़ अपनी जगह नहीं मिलती तो मुझे थोड़ा गुस्सा आता है और मैं अपने धर्म पति से झगड़ पड़ती हूं। मुझे श्रीमती सुरजीत बराड़ जी की सभा से लाभ हुआ है।

29. अशोक लुधियाना (लिखकर दिया)

भगवान की शरण में आने से पहले मैं बहुत नशे किया करता था, माँसाहारी और जुआरी भी था और अन्य कई बुराइयों में बुरी तरह ग्रस्त था यानि कि बस जी रहा था और साँसे ही ले रहा था, जीवन का कुछ पता नहीं था शायद अन्त निश्चित ही हो गया होता। सौभाग्य से देवात्मा के दर का पता चला और कदम दर कदम जीने की राह की ओर चलना शुरू हो गया। श्रीमान यशपाल जी भल्ला की सभाओं की ओर किसी महान शक्ति ने धकेलना शुरू किया और मेरे सौभाग्य के द्वार खुलने शुरू हो गए। नशे छूट गए, धूम्रपान छूट गया और बहुत सी बुराइयों, बीमारियों से छुटकारा मिलने लगा। हालांकि शुरू – 2 की सभाओं में जब आता था, बीड़ी सिगरेट पीकर आता था और वापसी में शराब पीता था। क्या वह दिन थे, याद आती है तो रूह काँप जाती है। सभाओं से इतना लाभ होना शुरू हुआ कि ब्यान से बाहर है। घर में शान्ति हो गई, सकून हो गया। मेरे बच्चे बहुत सेवाकारी हैं – Business छोड़ दिया है क्या करूँगा रूपये कमाकर, बहुत कुछ भगवन ने दे दिया है। अब तो मज़बूरी में भी सभा छोड़ने को मन नहीं होता। शुक्रवार को एक आपरेशन कराया था लेकिन ईतवार की सभा में शामिल हुआ। हालाँकि डाक्टर ने 15 दिन Rest के लिए कहा था, लेकिन सब ठीक हुआ। भल्ला जी के प्रति मेरे पास धन्यवाद के भी शब्द नहीं हैं। मेरे 15 – 20 मित्र थे और सारे शराबी कबाबी

थे, सबसे ज्यादा मैं था और मुझे सबसे पहले मरना था। परन्तु हुआ ये कि वो 15 – 20 दोस्त मर गए और भगवान देवात्मा ने मुझे स्वस्थ करके नव जीवन दिया। आत्मा का कुछ – 2 ज्ञान हुआ। सेवा का महत्त्व पता चला। अब पार्क में रोज कूड़ा उठाता हूँ, लोग फेंक जाते हैं मैं साफ कर देता हूँ। हमारी पूरी गली में कुत्ते, बिल्ली गन्दगी फैला देते हैं मुझे साफ करने में कोई संकोच नहीं है। अड़ौसी पड़ौसी एक दूसरे से इस बात को लेकर लड़ पड़ते हैं, मुझे फख़्र है कि मैंने कूड़ा उठाने के औज़ार बनवा रखे हैं और सफाई करके उन्हें शान्त कर देता हूँ। परिशोध भी किए हैं, उच्च सुख मिले हैं। पहले सुबह से ही शराब पीना शुरू कर देता था लेकिन अब महासौभाग्य से बगैर पीने के ही 24 घंटे नशा रहता है। भगवान की शिक्षाओं को मेरे जैसा अदना क्या समझेगा लेकिन जितने कदम आगे बढ़ते हैं बरकतों के द्वार खुलते जाते हैं। बस अब तो यही गुनगुनाता रहता हूं क्या बताऊँ क्या मिली दौलत मुझे जब से थामी है कलाई आपकी।

आख़िर में देव आरती के गान और जय ध्वनि से यह प्रोग्राम समाप्त हुआ।

शोक है कि इतनी खुशी और सफलता के बाद एक बहुत बड़ी दुर्घटना हुई, जो श्रीमान जगजीत सिंह जी का हार्ट अटैक से अचानक परलोक गमन हो गया। दो और धर्म सम्बन्धियों का धुन्ध के कारण ऐक्सीडैंट हो गया, परन्तु शुक्र है वह ठीक ठाक है।

हम कितने विश्वास पात्र हैं?

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है : –

"पिशाचत्व के नाश और देवत्व के विकास में मैं इस प्रकार का दृश्य देखता हूं कि जिसमें मनुष्यात्मा एक दूसरे के लिए हितकर, वफ़ादार और भरोसे के योग्य प्रमाणित हो।"

"मैं इस पृथ्वी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूं कि जो इसी दुनिया में सब प्रकार के पापों और बुराइयों का नाश करता हो, जो इसी दुनिया में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य सम्बन्धी उत्पन्न करता हो।"

"भरोसे के योग्य" यों तो तीन शब्द हैं परन्तु इनकी व्याख्या बहुत विशाल है जिस पर एक पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। नीच भाव, नीच जीवन और किसी भी अंग में आत्मिक दुर्बलता रखकर कोई जन पूर्ण रूप से भरोसे के योग्य नहीं बन सकता।

पहले हम रुपये पैसे या धन सम्पत्ति, वस्तु पदार्थ आदि के विषय को ही ले सकते हैं। इन वस्तुओं का कैसा भयानक अपहरण संसार के चारों ओर वर्तमान है! कितने मनुष्य हैं जो इस विषय में विश्वास पात्र हैं? यदि सभी मनुष्य विश्वास पात्र हों तो एक ही घर में ढेर सारे तालों और चाबियों और अनेक प्रकार के अन्य प्रबन्धों की आवश्यकता ही न हो। संसार में सब का धन, माल, सम्पत्ति वस्तुएं पूर्ण रूप से सुरक्षित हो जाएं और इस अंग में मनुष्य निर्भय होकर अपना जीवन व्यतीत करें। परन्तु अधिकतर लोगों के

विषय में यही कहा जा सकता है कि वो भरोसे के योग्य नहीं। एक राजा की कथा है कि उसने राजपाट त्याग कर सन्यास ले लिया। इस सन्यास अवस्था में भी उसने जब एक बार मार्ग में कोई लाल वस्तु पड़ी देखी तो उसे लाल (अनमोल रत्न) समझ कर उठाने का यत्न किया, परन्तु वह उठाए जाने की वस्तु नहीं थी। किसी ने पान खाकर वहां थूक दिया था और वह पान की पीक थी। राजा बहुत लज्जित हुआ कि सन्यासी होकर भी मेरे भीतर अभी हीरे और लाल का प्यार वर्तमान है। यह धन, पदार्थ और सम्पत्ति का प्यार मनुष्यों को बेईमान बना देता है। जिन देशों में ईमानदारी का भाव अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में है वहां खोई गई वस्तुएं Lost Property Office में पहुंच जाती हैं। यदि सब देशों के सब मनुष्य ईमानदार बन जाएं तो अपनी खोई हुई वस्तु के सम्बन्ध में किसी को तनिक भी चिन्ता न हो।

"बिल्ली और दूध की रखवाली!" एक प्रसिद्ध कहावत है। बिल्ली पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि वह दूध की रखवाली करेगी। एक कुत्ते को यदि खरगोश दिखाई दे जाए तो यह उसके वश की बात नहीं कि फिर वह उसे मार देने के लिए उसके पीछे न दौड़े। बिल्ली भी चूहे और कबूतर पकड़ने और मार कर खा जाने के लिए विवश है। इन पशुओं में जो हिंसा की शक्ति काम आती है उसके कारण उनकी रक्षा में खरगोश और कबूतरों को नहीं छोड़ा जा सकता। उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता।

कोई मनुष्य भी जितना अपने भीतर नीच भाव या नीच शक्तियां रखता है और जितना उच्च भावों और उच्च बोधों से शून्य है उतना ही वह विश्वास के योग्य या भरोसे के योग्य नहीं है। नीच भावों की वर्तमानता और उच्च भावों और बोधों का अभाव रखकर हम विश्वास पात्र नहीं बन सकते।

ईमानदारी का अभाव

एक बार मैंने एक सज्जन से जो बाल्यकाल में मेरे सहपाठी रहे थे, एक पुस्तक पढ़ने के लिये ली। कुछ दिनों के बाद मैं वह पुस्तक वापिस करने गया तो वह बोले कि आप पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने पुस्तक वापिस की है। उन्हें पुस्तकें पढ़ने और रखने का शौक था और उनके मित्र और परिचित जन जो पुस्तकें ले जाते होंगे परन्तु ईमानदारी और कृतज्ञता न होने के कारण पुस्तकें वापिस नहीं करते थे। हम में से भी कईयों का ऐसा ही कटु अनुभव होगा। कई बार पुस्तकें बड़ी कीमती और दुर्लभ होती हैं। वह भी दिए जाने के बाद वापिस नहीं आती। अब यदि किसी को पुस्तक देने से इन्कार किया जाये तो वह बहुत बुरा मनाता है और पुस्तक दे दी जाये तो वापिस आना कठिन है। यदि कृतज्ञता का भाव हो तब तो हम पुस्तक भी वापिस करेंगे और बहुत धन्यवाद भी देंगे और केवल ईमानदारी हो तो वापिस तो कर ही देंगे। कई बार ऐसा भी होता है कि पुस्तक वापिस तो आ गई है परन्तु उसका रुप अबोधता और लापरवाही से बिगाड़ दिया गया है।

यही बात कर्जा लेने और देने में देखी जाती है। एक हलवाई ने अपनी दुकान पर एक दिलचस्प शेर लिखकर लगाया हुआ था :-

कर्ज अहबाब को देने से मोहब्बत टूटे,
गांठ से जाए रक़म हाथ से गाहक छूटे।

आपके तकें मोहब्बत हमें मंज़ूर नहीं,
इसलिए कर्ज़ के देने का यां दस्तूर नहीं।

रात दिन कर्ज़ा दबा लेने और विश्वास घात करने की घटनाएं हम अपने चारों ओर देखते हैं। मेरे एक परिचित जन ने अपने एक बहनोई को ऋण दिया। बड़े आड़े समय में उनकी सहायता की। जब बहनोई की आर्थिक स्थिति बहुत सुधर गई और वह बहुत सम्पन्न हो गए तो मेरे उस परिचित ने उनसे अपनी आवश्यकता बताकर उनका धन लौटाने को कहा। परन्तु अब वहां वह विनयशील व्यक्ति नहीं था जिसने विनयी होकर कर्ज़ लिया था। अब वहां निपट स्वार्थी और कठोर व्यक्ति था जो न केवल धन वापिस नहीं करता किन्तु मांगने तक का बहुत बुरा मानता है।

हमारे देश में यदि किसी की सहायतार्थ उसे कुछ दिन के लिये अपना मकान दे दो तो एक एक जन मालिक बनकर बैठ जाता है लेते समय यह बड़ी दीनता और नम्रता का प्रकाश करता है और बार बार प्रतिज्ञा करता है कि जब आप कहेंगे मकान खाली कर दूंगा, परन्तु जब समय आता है तो आंखें दिखाता है। फिर वर्षों अदालतों में धक्के खाकर और समय, धन और शक्तियां बर्बाद करके और अपना सुख और अपनी शान्ति वर्षों तक खोकर भी अपना मकान वापिस लेना कठिन होता है। हमारे एक बहुत ही अच्छे साथी को अपने प्राणों से ही हाथ धोने पड़े। उनका अपराध यह था कि किसी की सिफ़ारिश से उन्होंने एक दुष्ट व्यक्ति को अपने मकान का कुछ भाग रहने के लिए दे दिया था।

ईमानदारी के अभाव से मनुष्य धरोहर हरण या अमानत में ख़यानत करते हैं। एक एक नौकर लाखों रुपया और ज़ेवर लेकर भाग जाता है। हां एक एक नौकर अपने मालिक की हत्या तक कर देता है।

रिश्वतखोरी एक विश्वव्यापी शाप बन गया है। एक एक विभाग को लीजिए। चपरासी से लेकर मंत्रियों तक पैसा खाते हैं। एक एक पुलिस वाले का दांव लग जाए सही फिर वह पूर्णत: निर्दोष व्यक्ति को भी नहीं छोड़ता। वह इस ताक में रहता है कि कोई शरीफ और संकटग्रस्त व्यक्ति हमारे पंजे में फंसे सही, ऐसे जन हिंसक पशुओं के समान हैं जो दूसरों का खून पीते हैं। जब एक एक जज या न्यायाधीश भी रिश्वत लेते हों तो मनुष्य किस पर विश्वास करे?

कितने जन हैं जो इन बातों में पूर्ण रूप से विश्वास पात्र हैं?

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने एक बार फरमाया था कि चोरी अपने पति की भी नहीं करनी चाहिए। यही बात पति के लिए और संतान के लिए भी सत्य है। किसी घर के ही व्यक्ति या साथी या मित्र की कोई वस्तु हम बिना पूछे ले लेते है तो वह चोरी न भी हो तो भी हमारे मित्र और साथी को उस वस्तु की तलाश करने की परेशानी में तो हम डाल ही देते हैं और उनका सन्देह किसी अन्य जन पर भी हो सकता है।

एक बार मैं एक परिवार में ठहरा हुआ था। मैं उस परिवार से बहुत सेवा पाता था। उस को एक पत्र लिखने के लिए एक लिफ़ाफ़े की

आवश्यकता थी। उन्होंने मरे काग़जों में से लिफाफा लेकर अपने काम में ले लिया। इसमें कोई चोरी का भाव नहीं था। बेशक तकल्लुफ़ी कही जा सकती है। आपस में ऐसी छोटी छोटी वस्तुएं लेना कोई दोष नहीं समझा जाता। मेरे लिए तो यह खुशी की बात थी कि मेरी कोई तुच्छ सी वस्तु उनके काम में आ गई, जिनसे मैं इतनी सेवा पा रहा हूं, पर वह भगवान देवात्मा के सेवक थे। उन्हें एक सभा में बैठकर यह बात भी ग़लत अनुभव हुई और उन्होंने क्षमा प्रार्थना की।

एक आर्य समाज के प्रचारक मेरे परिचित थे। वह कहने लगे कि मुझे यह बात विचित्र प्रतीत होती है, कि हम एक ही घर में अपने अपने ट्रकों को ताला लगाकर रखते हैं। बात यह है कि एक दूसरे की चोरी करने का भाव तो अधिकतर नहीं होता परन्तु अबोधता के कारण बिना पूछे एक या दूसरी वस्तु ले लिए जाने या गुम हो जाने का डर अवश्य रहता है।

ऐसे ही संसार में भगवान देवात्मा ने मनुष्यों के नीच भावों को नष्ट करके और उनमें उच्च भाव और उच्च बोध विकसित करके उन्हें भरोसे के योग्य व्यक्ति बना दिया है। सारा संसार रिश्वत के जिस महा पाप और अपराध में ग्रस्त है और कथित धर्म मत और कानून उसे बन्द करने में असमर्थ हैं उस पाप से उन्होंने अपनी समाज और अपने सेवकों और अन्य अनेक अधिकारी जनों को मुक्त कर दिया। इतना ही नहीं अनेक जनों ने पहले ली हुई रिश्वत वापिस की है या जिस को वापिस करनी थी उसका पता न लगने पर वह रक़म भलाई और परोपकार के काम में दे दी है। इसी प्रकार सरकार की चोरियों का, बिना टिकट सफ़र करने का या अन्य किसी अनुचित उपाय से किसी का धन अपहरण करने का परिशोध किया है। एक एक तहसीलदार ने अपनी घोड़ी के मुंह पर छीका बांध दिया ताकि वह किसी के खेत से एक घास का तिनका भी न खा सके। भगवान देवात्मा के एक सेवक को मार्ग में एक खरबूज़ा पड़ा मिला। स्वयं तो लेने का प्रश्न ही नहीं था। वह सोच कर कि किसी खरबूज़े बेचने वाले गरीब व्यक्ति का गिर पड़ा होगा वह उसे लेकर सब्ज़ी मंडी की तरफ चले और पूछताछ करते करते उसे उसके असल मालिक तक पहुंचा दिया। एक बालक देव समाज के एक स्कूल में पढ़ता था। छुट्टियां होने पर वह अपने संरक्षक पारिवारिक जनों के साथ अपने स्थान की ओर जा रहा था। रास्ते में उसके पारिवारिक जनों ने तो किसी के खेत से बहुत सारे हरे चने उखाड़े परन्तु उस बालक ने एक टांट भी नहीं तोड़ी। शाम को घर पर जब उसे भोजन करने के लिए कहा गया तो उसने कहा कि आप लोगों ने चुराए हुए हरे चनों की जो सब्ज़ी पकाई है, वह मैं नहीं खाऊंगा।

एक एक सर्राफ़ जो पहले बहुत बेईमान थे और सोने में मिलावट करते थे देव समाज में आकर इतने ईमानदार बन गए कि लोग बिना तुलवाए ही सोना चांदी उनके हवाले कर जाते थे।

एक बार हमारे बड़े सत्संग में सैंकड़ों जनों के लिये एक हलवाई से प्राय: एक महीने तक दूध आता रहा। सत्संग की समाप्ति पर हम

उसका हिसाब करने के लिये गये तो उसने कहा कि हम तो आपका दूध लिखते नहीं, क्योंकि हम जानते हैं कि आप अपने हिसाब के अनुसार जो कुछ देंगे वह अधिक तो हो सकता है कम नहीं।

एक महोत्सव पर जहां देश के अनेक स्थानों से यात्री आए थे दान में प्राप्त हुई बड़ी रकम भूल से मेज़ पर पड़ी रह गई। अगले दिन संभाली तो वह ज्यों की ज्यों मिल गई। देव समाज के एक सेवक का एक व्यापारी से लेन देन था। सेवक ने एक बार अपना हिसाब किया तो बारह हज़ार रुपये बढ़ रहे थे। उसने व्यापारी के पास जाकर उसे अपना बही खाता देखने और अपने हिसाब की पड़ताल करने को कहा। व्यापारी ने हिसाब देखकर कहा कि हिसाब सब बराबर है और आपसे कुछ लेना बाकी नहीं है परन्तु सेवक ने उनके हिसाब की भूल बताकर उन्हें बारह हज़ार रूपये वापिस कर दिये। ऐसी अद्वितीय है हमारे गुरू की शिक्षा और उसके प्रभाव।

(पुराना लेख)

हमें गुरू चाहिए था ऐसा।

प्रिय मित्रो! हमें वास्तव में ही जैसे आध्यात्मिक - गुरू की आवश्यकता है, "विज्ञान मूलक सत्यधर्म के प्रवर्तक एवं संस्थापक भगवान देवात्मा" शत प्रतिशत वैसे ही गुरू हैं, जैसा कि नीचे उद्धत किये गए लेख से स्पष्ट है। काश! हम उनकी अद्वितीयता का सचमुच ही कुछ न कुछ बोध प्राप्त कर सकें।

हमें चाहिए गुरू ऐसा। आज विश्व की जो हालत हो गई है, वह किसी से छुपी हुई बात नहीं हैं। पूरे संसार में चारों ओर मिलावट, जमाखोरी, चोरी, डकैती, लूट - मार, बलात्कार, अश्लीलता, हत्याएं, आत्महत्याएं, कितने ही देशों में विस्तारवाद का भयंकर रोग तथा घातक से घातक हथियारों के इकट्ठा करने की होड़ लगी हुई है। आज समूचा विश्व भय में जी रहा है, कि न जाने कौन पागल व्यक्ति या देश कब परमाणु बम चलाकर विश्व युद्ध आरम्भ कर दे। ऐसे वातावरण में कोई चैन की सांस ले भी कैसे सकता है? जहां विश्व में चारों ओर महा भयानक पापों तथा अपराधों का दावानल भयानक तौर पर धधक रहा हो, तथा यह तक मालूम न हो कि किस जन को किस तरफ से कब कोई गोली या बम आ लगेगा, इन हालात में समूची मानवता को घोर निराशा तो घेर ही लेगी। क्या ऐसे अस्थिर वातावरण में किसी के लिए चैन से सांस लेने और शान्तिपूर्वक जीने की कोई आशा हो सकती है? शायद विश्व की ऐसी ही भयानक दशा को सन्मुख रखकर "विज्ञानमूलक सत्यधर्म के एक मात्र प्रवर्तक एवं संस्थापक परम पूजनीय भगवान देवात्मा" ने अपनी देववाणी में एक स्थान पर यह फरमाया है, कि -

"पिशाचत्व के समुन्द्र में डूबते हुए आत्माओं के लिए मैं जीवन की आशा का एक जहाज़ हूँ और पिशाचत्व के असरों से गिरी हुई जमाअतों (वर्गों) और कौमों के बचाने, उभारने तथा उन्हें आला (अर्थात श्रेष्ठ) बनाने के लिए मैं मिसल एक ख़मीर हूँ। देवत्व का यह ख़मीर जो मेरे अन्दर है, पिशाचत्व को मारता है और इसलिए यह पिशाचत्व के विष से संक्रांत आत्माओं के उद्धार और उनकी भलाई का एकमात्र सच्चा

तथा पवित्र दैवीय उपाय है।"

प्रिय मित्रो! देवात्मा का उपरोक्त दावा किसी साधारण व्यक्ति द्वारा बोले गए कोई साधारण शब्द नहीं हैं। इन शब्दों का मर्म समझना हम सबके लिए अत्यन्त आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि आज संसार में हमें एक ऐसा आध्यात्मिक गुरू चाहिए जो सत्य और शुभ के पूर्णांग अनुरागों से पूरी तरह सम्पन्न हो। जो असत्य और अशुभ - मूलक सब दोषों से पूर्णत: मुक्त हो। हमें ऐसे गुरू की आवश्यकता है, कि जो सब प्रकार की सात्विक - शक्तियों से पूरी तरह सुसज्जित हो। इन सारी आत्मिक योग्यताओं के फलस्वरूप जिनके देवरूप में अद्वितीय देवज्योति जिससे कि सारी मानवता पूरी तरह शून्य है, पूर्ण मात्रा में वर्तमान हो। हमें ऐसे गुरू की आवश्यकता है, कि जिनके देवरूप में ऐसा देवतेज पूर्ण मात्रा में वर्तमान हो, जो मानवता के सारे आत्मिक रोगों तथा दोषों को पूरी तरह नष्ट कर सकता हो तथा मानवता में सब प्रकार के उच्च - भावों, उच्च - गुणों तथा उच्च - जीवन को प्रस्फुटित तथा विकसित कर सकता हो। हमें ऐसा गुरू चाहिए जो जन्मकाल से ही ऐसी जीवन - विषयक विशेषता लेकर प्रगट हुआ हो, जिससे पूरा संसार आज तक शून्य रहा है तथा जो दैवीय गुण (अर्थात सर्वोच्च एवं सर्वश्रेष्ठ गुण तथा भाव) मनुष्य - जगत की कल्पना से भी लाखों और करोड़ों गुणा बढ़कर आश्चर्यजनक तथा मूल्यवान हैं, उन दैवी गुणों से पूर्णत: सुशोभित या सुसज्जित हो।

हमें ऐसा गुरू चाहिए जिनका लक्ष्य मानवता में, सब प्रकार के पाप जीवन से मोक्ष और उन्हें उच्च भावों में विकसित करना हो।

हमें ऐसा गुरू चाहिए जिनकी धर्म की शिक्षा विज्ञान पर पूर्ण रूप से आधारित हो।

हमें ऐसा गुरू चाहिए जो मिथ्याओं, कुसंस्कारो, झूठे रीति रिवाजों से न केवल पूर्ण रूप से स्वयं मुक्त हो, बल्कि मानवता को मुक्त करने की पूर्ण सामर्थ्य रखता हो।

हमें ऐसा गुरू चाहिए जो मनुष्यों में कृतज्ञता, श्रद्धा, सहानुभूति कर्तव्य परायणता आदि उच्च गुणों को पैदा करने की पूर्ण सामर्थ्य रखता हो।

हमें ऐसा गुरू चाहिए जो केवल मनुष्यों को पाप जीवन से बचाए ही नहीं बल्कि पिछले किए हुए पापों का परिशोध करवाने में भी पूर्णत: सक्षम हो।

हमारे धन्य भाग्य हैं कि हमें ऐसी अद्वितीय क्षमता रखने वाले गुरू मिले हैं, जिन्होंने हज़ारों पापियों को पापों और मिथ्या से न केवल बचाया है, बल्कि दर्जनों को इस कारज में लगाया है। कृतघ्न बच्चों को कृतज्ञ बनाया है। माता पिता के लिए सेवाकारी बनाया है। भाईयों, बहनों, पति - पत्नी आदि के रिश्तों को सुधार कर स्वर्गीय दृश्य पैदा किए हैं। नीच जीवन को घटाकर उच्च जीवन की बरकतों से मालामाल किया है। काश! इस अद्वितीय आविर्भाव की महिमा को मानवता पहचान सके और उच्च बरकतों की भागी बन सके। ऐसे निराले कारज करने वाले विशेष गुरू की सम्पूर्ण मानवता को आवश्यकता है।

- चन्द्रगुप्त (अम्बाला)

देव समाज में काम करने वालों के लिए

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का मुबारिक काम करने के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए निम्नलिखित बातें अनिवार्य हैं : -

1. धन विषयक मामलों में पूर्ण रूप से ईमानदार रहना और न केवल ईमानदार रहना बल्कि धन के लिए धन रखने की इच्छा से भी मुक्त होना।

2. स्त्री पुरूषों के मामले में सर्वथा पवित्र रहना... यहाँ तक कि सोशल मेल मिलाप में भी पुरुषों और स्त्रियों को एक दूसरे के सम्बन्ध में बहुत सावधान रहना और कड़ा संयम रखना। यथा सम्भव मैली चिन्ताओं से भी ऊपर रहना।

3. अपने किसी मतलब या निजी स्वार्थ की दुर्बलता और प्रलोभन से ऊपर रहना।

4. यदि किसी संस्था के हैड हों तो दूसरों की व विशेषकर युवकों की सेवा में गहरी तृप्ति अनुभव करना।

5. नाम, पद, सत्ता और शोहरत के प्यार से ऊपर रहना।

6. ईर्षा से मुक्त होना जो मनुष्य के लिए बहुत बड़ा शाप है।

अत: जन सेवा के काम करने वालों - विशेषकर देव समाज में काम करने वालों - को पूरे भरोसे के योग्य होना चाहिए, दूसरों की निष्काम सेवा के लिये सदा तैयार रहना चाहिए। कोई लालच या प्रलोभन उसके जीवन पर कालख़ न लगा पाए। उस मिशन की पवित्रता में उसकी पद लोलुप्ता या सत्ता या ताक़त का प्यार विष न घोल दे। इसी प्रकार उसे ईर्षा से ऊपर होना चाहिये। पवित्रता, सेवा और सदभावना का वातावरण अपनाना अत्यन्त आवश्यक है। हम शब्दों की बजाए अपने जीवन से अधिक प्रचार कर सकते हैं।

मैंने एक युवक की घटना बताई है, कि होस्टल के साथी लड़कों के बीमार होने पर वह सेवा करने में कोई भाग नही लेता था। मैंने उसे कुछ नहीं कहा। एक बार वह स्वयं बीमार हो गया। लड़के उसके साथ बदले में उस जैसा ही व्यवहार करना चहते थे और उसको उसी के हाल पर छोड़ देना चाहते थे। परन्तु मैं यह सहन नहीं कर सकता था। अत: मैंने कुछ कॉलेज के लड़कों की जो सेवा करने के लिए सहमत थे, दिन के लिये डयूटी लगा दी और होस्टल के लड़कों की रात के लिये। एक सप्ताह उसकी सेवा होती रही और वह बदल गया। फिर बीमारों की सेवा करने में वह आगे होता था। ....

स्वार्थ मुक्त दृष्टिकोण के कारण मैं निर्भय हो गया था। क्योंकि मेरा निज का कोई स्वार्थ नहीं था इसलिए मैं किसी ग़लत बात के सन्मुख झुकता नहीं था। एक समय ऐसा आया कि कॉलेज के विरुद्ध आन्दोलनकारियों ने एक कांफ्रेंस बुलाई। एक जाने माने पालिटिकल व्यक्ति को मुझ पर दबाव डालने के लिए बुलाया। मैंने कॉलेज के अधिकारियों को बता दिया था कि मैंने कोई बात गलत नहीं की है इसलिये मैं किसी डर या धमकी के आगे नहीं झुकूंगा। यदि वह चाहें तो मैं प्रिंसिपल का पद छोड़ देने के लिये तैयार हूँ और वह कोई नया प्रिंसिपल रख सकते हैं। उनकी यह मेहरबानी थी कि उन्होंने मेरी उचित बात का साथ दिया।

(श्रीमान पी. वी. कनल)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पृष्ठ 2 का बाकि

योगदान को याद किया।

सभा में इतना उच्च मण्डल पैदा हो रहा था कि जैसे फरिश्तों की सभा महसूस हो रही थी। कई वक्ताओं का ब्यान अश्रु पूर्ण गहरे दिली भावों से पूर्ण था जिससे सब जन प्रभावित हो रहे थे। किसी धर्म सम्बन्धी की श्राद्ध सभा की ऐसी सच्ची और हित मूलक श्रद्धांजली आत्मा को विशेष प्रभावित करने वाली थी और ऐसी समाज और उनकी ऐसी निहायत विशेष संस्कृति की साधन विधियाँ प्रदान करने वाले अद्वितीय गुरू की महिमा सामने आकर दिल उनके श्री चरणों में झुकने के लिए मजबूर हो रहा है।

– गोपाल कृष्ण

– – 0 – –

वो धीरे – 2 मन्दिर में आना आपका
और फूलों को अपने साथ लाना आपका
भगवान के श्री चरणों में चढ़ाना आपका
वो भाव भंगिमाएं देखकर सारी आपकी
कभी न भूल पाएँगे जगजीत जी आपको
इस मन्दिर में बहुत भारी शान थी आपकी
बहुत – 2 याद आएगी जगजीत जी आपकी

– अशोक, लुधियाना

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : – श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts